विविधा-1

कवि परिचय

दीनदयाल गिरि

दीनदयाल गिरि का जन्म काशी के साधारण ब्राह्मण परिवार में सन् 1802 में हुआ था। 5-6 वर्ष की अल्पायु में ही इन्हें अपने माता-पिता का वियोग सहना पड़ा। इनका पालन-पोषण महंत कुशगिरि ने किया। गिरि जी संस्कृत और हिन्दी के विद्वान थे। वे भारतेन्दु जी के पिता गिरिधर दास के परममित्रों में से थे। गिरिजी का निधन सन् 1856 में होना बताया जाता है।

आपकी प्रमुख रचनाएँ दृष्टांत तरंगिनी, विश्वनाथ नवरत्न, अनुराग वाटिका, अन्योक्ति कल्पद्रुम हैं।

दीनदयाल गिरि ने वसंत, ग्रीष्म, शरद आदि ऋतुओं पर, कोकिल कौआ, हंस आदि पक्षियों पर, बादल नदी, समुद्र आदि प्राकृतिक उपादानों पर, हाथी, कुंरग, अश्व आदि पशुओं पर, पलाश, बबूल आदि वृक्षों पर जो अन्योक्तियाँ लिखी हैं, उनकी समानता हिन्दी साहित्य में मिलना कठिन है। यद्‌यपि दीनदयालजी ने अन्य कवियों की रचनाओं से भी भाव ग्रहण किए हैं लेकिन उनकी कविताओं में पूर्व कवियों की अपेक्षा नूतन चमत्कार है, पूर्ण मौलिकता है।

काव्य हमारे मनोलोक में विविध भावों और विचारों का सतरंगी इन्द्रधनुष निर्मित करता है। काव्य के अन्तर्गत सुख- दुख, हर्ष- अमर्ष, प्रेम - घृणा आदि भावों का चित्रण जीवन की संपूर्णता को प्रकट करने के लिए किया जाता है। काव्य में भाषा और भाव दोनों की अहम् भूमिका है। भाषा काव्य का शरीर है तो भाव काव्य की आत्मा, जिसे हम कला पक्ष और भाव पक्ष भी कहते हैं। कला पक्ष और भाव पक्ष को ध्यान में रखते हुए ही विविधा-1 तथा विविधा-2 की कविताओं का चयन किया गया है। जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास और जीवन में आनंद की सृष्टि काव्य के प्रमुख मूल्य हैं। विविधा के अन्तर्गत काव्य के समवेत प्रभावों का अवलोकन इस तरह से किया जा सकता है कि हम जीवन की विभिन्न संवेदनाओं से परिचित हो सकें।

विविधा-1 में कला पक्ष की दृष्टि से कुण्डलियाँ और ग़ज़लें चयनित की गई हैं। दीनदयाल गिरि की कुण्डलियों में विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से नीति संबंधी बातें कही गई हैं। थोड़े दिन के लिए प्राप्त रूप व धन पर गर्व नहीं करना चाहिए, मनुष्य की वाणी उसके व्यक्तित्व की पहचान होती है, किसी की नकल करने में व्यक्ति गुणवान नहीं बन जाता आदि सीख बड़े सहज ढंग से इन कुंडलियों में व्यक्त हुई है।

अत्याधुनिक काल में सामाजिक यथार्थ के चित्रण में दुष्यन्त कुमार की गजलों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। वे बिना लाग-लपेट के अपने समय और अपने समाज की तीखी आलोचना करते हैं। उनकी कविता में यथार्थ से जूझने की शक्ति है। वे मानते हैं कि परिस्थितियाँ यद्यपि अनुकूल नहीं है, किंतु इसमें परिवर्तन की हिम्मत तो हमें जुटाना ही पड़ेगी। संकलित ग़ज़लों में उनका यह स्वर जीवन के प्रति गहन आस्था जागृत करने वाला है। अपने समय की भयावह स्थिति को व्यक्त करने वाली दुष्यन्त की इन ग़ज़लों में सामान्य-जन की पीड़ा और सामान्य-जन की जिजीविषा का प्रभावशाली भाषा में चित्रण किया गया है।

दीनदयाल गिरि जी की कविता में अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है। अन्योक्ति उनका प्रिय अलंकार है।

दीनदयाल जी की भाषा ब्रजभाषा है। यह उनके भावों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त भी है। उनकी भाषा प्रसाद गुण से भी परिपूर्ण है। उनकी कविता शान्तरस में है अतः माधुर्य गुण से परिपूर्ण है। उनकी कविताओं में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी हुआ है।

शब्दों को तोड़ मरोड़कर उनका प्रयोग करना कवियों का अधिकार माना जाता है। दीनदयाल गिरिजी ने भी इस अधिकार का प्रयोग किया है। इनका काव्य मुख्यतः व्यंग्यात्मक है आपकी कविता उच्च कोटि की है। आध्यात्मवादियों में आपका स्थान ऊँचा है ।

कुण्डलियाँ

रंभा! झूमत हौं कहा थोरे ही दिन हेत।
तुमसे केते ह्वै गए अरु ह्वै हैं इहि खेत॥
अरु ह्वै हैं इहि खेत मूल लघु साखा हीने।
ताहू पै गज रहे दीठि तुमरे प्रति दीने ॥
बरनै दीनदयाल हमें लखि होत अचंभा।
एक जन्म के लागि कहा झुकि झूमत रंभा॥

वायस ! तू पिक मध्य ह्वै कहा करै अभिमान।
ह्वै हैं बंस सुभाव की बोलत ही पहिचान॥
बोलत ही पहिचान कानकटु तेरी बानी।
वे पंचम धुनि मंजु करैं जिहिं कविन बखानी॥
बरनै दीनदयाल कोऊ जौ परसौ पायस।
तऊन न तजै मलीन मलहि खाये बिन वायस॥

करनी विधि की देखिए, अहो न बरनी जाति।
हरनी के नीके नयन बसै बिपिन दिनराति॥
बसै बिपिन दिनराति बराबर बरही कीने।
कारी छवि कलकंठ किये फिर काक अधीने॥
बरनै दीनदयाल धीर धरते दिन धरनी।
बल्लभ बीच वियोग, विलोकहु विधि की करनी॥

दुष्यन्त की ग़ज़लें

कवि परिचय

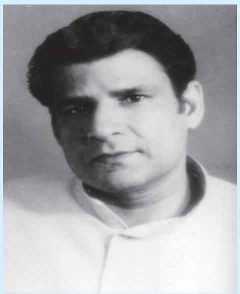

दुष्यन्त कुमार त्यागी

दुष्यन्त कुमार समकालीन कविता के समर्थ हस्ताक्षर हैं। हिन्दी ग़जल विधा को लोकप्रिय बनाने और उसको प्रतिष्ठित करने में भी दुष्यन्त कुमार का महत्वपूर्ण योगदान है। दुष्यन्त कुमार और हिन्दी ग़जल आज पर्याय रूप में हमारे समक्ष मौजूद हैं। दुष्यन्त कुमार त्यागी का जन्म 1 सितम्बर सन् 1933 को हुआ। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और कई वर्षो तक आकाशवाणी भोपाल से सम्बद्ध रहे। आप भाषा विभाग भोपाल में भी अधिकारी रहे। 30 दिसम्बर सन् 1975 को दुष्यन्त का अल्पायु में ही निधन होने से साहित्य की अपूर्ण क्षति हुई।

दुष्यन्तजी ने कविता, गीति नाट्य, उपन्यास सभी विधाओं में लिखा है। उनके काव्य संकलनों में 'सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे' और गीति नाट्य 'एक कण्ठ विषपायी' प्रमुख हैं। उपन्यासों में 'छोटे-छोटे सवाल' 'आँगन में एक वृक्ष' और 'दुहरी जिन्दगी' उल्लेखित है। 1957 से जारी उनकी साहित्य की यात्रा को 1975 में

(1)

आज सड़कों पर लिखे हैं, सैकड़ों नारे न देख,
घर अंधेरा देख तू , आकाश के तारे न देख।
एक दरिया है यहाँ पर, दूर तक फैला हुआ,
आज अपने बाजुओं को देख, पतवारें न देख।
अब यकीनन ठोस है धरती, हकीकत की तरह,
वह हकीकत देख, लेकिन ख़ौफ के मारे न देख।
वे सहारे भी नहीं अब, जंग लड़नी है तुझे,
कट चुके जो हाथ, उन हाथों में तलवारें न देख।
दिल को बहला ले, इजाजत है, मगर इतना न उड़,
आज सपने देख, लेकिन इस कदर प्यारे न देख।

(2)

रोज जब रात को बारह का गजर होता है,
यातनाओं के अन्धेरे में सफर होता है।
कोई रहने की जगह है मेरे सपनों के लिए,
वो घरौंदा सही, मिट्टी का भी घर होता है।
सिर से सीने में कभी, पेट से पाँवों में कभी,
एक जगह हो तो कहें दर्द इधर होता है।
ऐसा लगता है कि उड़कर भी कहाँ पहुँचेगे,
हाथ में जब कोई टूटा हुआ पर होता है।
सैर के वास्ते सड़कों पे निकलते थे,
अब तो आकाश से पथराव का डर होता है।

'साये में धूप' के साथ विराम मिला। साये में धूप गजल संग्रह से कवि को अपार ख्याति मिली। इन्होंने भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया इस कारण इन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का अवसरानुकूल चयन किया है। इनकी अधिकांश रचनाएँ मुक्तक हैं और छन्दों के बंधन से भी स्वतंत्र हैं।

दुष्यन्त जी कविता को राजनैतिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर लड़ाई का हथियार स्वीकार करते हैं। उनके व्यंग्यों में हास्य की अपेक्षा आक्रोश की प्रबलता है। उनकी भाषा में सहजता का गुण है। दुष्यन्त कुमार की कविता का मूल स्वर आम आदमी है। इनकी ग़जलें जन-जन तक पहुँची। दुष्यन्तजी ने ग़जल की उर्दू परम्परा को एक मोड़ देते हुए हिन्दी को समृद्ध किया है तथा कवियों को एक नई जमीन और नई दिशा प्रदान की है।

(3)

ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से दुहरा हुआ होगा,
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा।
यहाँ तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियाँ,
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।
गजब ये है कि अपनी मौत की आहट नहीं सुनते ,
वो सब के सब परेशां हैं, वहाँ पर क्या हुआ होगा।
तुम्हारे शहर में ये शोर सुन-सुन कर तो लगता है,
कि इन्सानों के जंगल में कोई हाँका हुआ होगा।
कई फाके बिताकर मर गया, जो उसके बारे में,
वो सब कहते हैं अब, ऐसा नहीं, ऐसा हुआ होगा।
यहाँ तो सिर्फ गूँगे और बहरे लोग बसते हैं,
खुदा जाने यहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कौआ और कोयल में क्या समानता है?
2. 'घर अँधेरा' से कवि का संकेत किस ओर है?
3. ''यहाँ तो सिर्फ गूँगे और बहरे बसते हैं।'' से कवि क्या कहना चाहते हैं?
4. कवियों ने किसकी बोली का बखान किया है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. केले के पौधे को देखकर कवि को क्या अचंभा होता है?
2. ''यातनाओं के अँधेरे में सफर होता है।'' का आशय लिखिए।
3. ''मिट्टी का भी घर होता है''। इसका क्या अर्थ है?
4. कौआ और कोयल का भेद कब ज्ञात होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'दुष्यन्त की ग़ज़लें' शीर्षक के आधार पर कवि के विचार उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।
2. दीनदयाल गिरि की कुण्डलियों का सार अपने शब्दों में लिखिए।
3. निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ व प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

   (अ) करनी विधि .... अधीने।

   (आ) वायस ....बखानी ।

   (इ) कोई रहने ....घर होता है।

   (ई) वे सहारे....................प्यारे न देख ।

काव्य सौंदर्य–

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–
   कोयल, कौआ, मोर, बादल,
2. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए –
   हकीकत, खौफ, इजाजत, सफर, जिस्म, जलसा
3. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
   गागर में सागर भरना, का बरषा जब कृषि सुखाने, टेढ़ी खीर होना, ऊँट के मुँह में जीरा, दाँत खट्टे करना, अधजल गगरी छलकत जाय।

पढ़िए और समझिए–

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवे।
खानपान, सम्मान, राग, रंग , मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दुख कुछ टरत न टारें।
खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना बिचारे।

उपर्युक्त छन्द में छः चरण हैं। प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ हैं। इस छंद में दोहा और रोला छंदों का इस प्रकार मिश्रण रहता है, मानो ये कुण्डली रूप में परस्पर गुथे हुए हैं। जिस शब्द से इस छंद का आरंभ होता है, उसी शब्द से अंत होता है। दूसरी पंक्ति का उत्तरार्द्ध तीसरी पंक्ति तथा पूर्वार्द्ध होता है। इस प्रकार के छन्द को कुण्डलियाँ छंद कहते हैं उपर्युक्त छन्द में ऊपर की दो पंक्तियों में दोहा छंद तथा शेष चार पंक्तियों में रोला छंद है।

4. कुण्डलियाँ छंद किन मात्रिक छंदों के योग से बनता है ? उदाहरण देकर समझाइए।
5. सही विकल्प छाँटिए–

   (अ) 'कोकिला' शब्द है–

   तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी

(आ) वायस का अर्थ है–

तोता , कौआ, बाज, कबूतर

आइए जानें–

गज़ल अरबी का शब्द है। ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता हैं। गज़ल ऐसी पद्यात्मक रचना होती है, जिसमें नायिका के सौन्दर्य एवं उसके प्रति उत्पन्न प्रेम का वर्णन होता है।

फारसी या उर्दू में प्रेम विषयक काव्य गीत 'गज़ल' कहलाती है।

गज़ल वही अच्छी होती है जिसमें असर और मौलिकता हो, जिसे पढ़ने वाला यह समझे कि यह उन्हीं की दिली बातों का वर्णन है।

प्राय: ग़ज़ल का हर शेर स्वयं में पूर्ण होता है, इसके दो बराबर टुकड़े होते है। जिसको 'मिसरा' कहते हैं।

हर शेर के अन्त में जितने शब्द बार-बार आएँ उनको 'रदीफ' कहा जाता है रदीफ के पहले के एक ही आवाज वाले शब्दों को 'काफिया' कहते है। उदाहरण – पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने हैं, जाने न जाने गुल ही न जाने बाग तो सारा जाने है।

इसमें 'जाने है'– रदीफ है और 'हमारा सारा' काफिया है।

हिन्दी के कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने गजल कही, उसकी भाषा खड़ी बोली है, जो उर्दू के समीप है। जयशंकर प्रसाद की 'भूल' शीर्षक कविता. इसी पद्धति की है। निरालाजी ने ग़ज़ल की शैली अपनाई है। दिनकर जी ने इसे सजाया सँवारा है।

6. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लो की विशेषताएँ लिखिए ।

योग्यता विस्तार

1. दुष्यन्त कुमार और दीन दयाल गिरि का साहित्य पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िए।
2. अन्य कवियों द्वारा रचित कुण्डलियाँ खोज कर संकलित कीजिए।

***